

CHAPTER - 15

गलता लोहा

लेखक परिचय

● **जीवन परिचय**-शेखर जोशी का जन्म उत्तरांचल के अल्मोड़ा में 1932 ई. में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। बीसवीं सदी के छठे दशक में हिंदी कहानी में बड़े परिवर्तन हुए। इस समय एक साथ कई युवा कहानीकारों ने परंपरागत तरीके से हटकर नई तरह की कहानियाँ लिखनी शुरू कीं।

इस तरह कहानी की विधा साहित्य-जगत के केंद्र में आ खड़ी हुई। इस नए उठान को नई कहानी आंदोलन नाम दिया। इस आंदोलन में **शेखर जोशी** का स्थान अन्यतम है। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें **पहल सम्मान** प्राप्त हुआ।

● **रचनाएँ**-इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी-संग्रह-कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है।

शब्दचित्र-संग्रह-एक पेड़ की याद।

इनकी कहानियाँ कई भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, पोलिश और रूसी में भी अनूदित हो चुकी हैं। इनकी प्रसिद्ध कहानी **दाज्यू** पर चिल्ड्स फिल्म सोसाइटी द्वारा फिल्म का निर्माण भी हुआ है।

● **साहित्यिक परिचय**-शेखर जोशी की कहानियाँ नई कहानी आंदोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाज का मेहनतकश और सुविधाहीन तबका इनकी कहानियों में जगह पाता है। निहायत सहज एवं आडंबरहीन भाषा-शैली में वे सामाजिक यथार्थ के बारीक नुक्तों को पकड़ते और प्रस्तुत करते हैं। इनके रचना-संसार से गुजरते हुए समकालीन जनजीवन की बहुविध विडंबनाओं को महसूस किया जा सकता है। ऐसा करने में इनकी प्रगतिशील जीवन-दृष्टि और यथार्थ-बोध का बड़ा योगदान रहा है।

पाठ का सारांश

गलता लोहा कहानी में समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी की गई है। यह कहानी लेखक के लेखन में अर्थ की गहराई को दर्शाती है। इस पूरी कहानी में लेखक की कोई मुखर टिप्पणी नहीं है। इसमें एक मेधावी, किंतु निर्धन ब्राह्मण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है, जहाँ उसके लिए जातीय अभिमान बेमानी हो जाता है। सामाजिक विधि-निषेधों को ताक पर रखकर वह धनराम लोहार के आफर पर बैठता ही नहीं, उसके काम में भी अपनी कुशलता दिखाता है। मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे को प्रस्तावित करता प्रतीत होता है मानो लोहा गलकर नया आकार ले रहा हो।

मोहन के पिता वंशीधर ने जीवनभर पुरोहिती की। अब वृद्धावस्था में उनसे कठिन श्रम व व्रत-उपवास नहीं होता। उन्हें चंद्रदत्त के यहाँ रुद्री पाठ करने जाना था, परंतु जाने की तबियत नहीं है। मोहन उनका आशय समझ गया, लेकिन पिता का अनुष्ठान कर पाने में वह कुशल नहीं है। पिता का भार हलका करने के लिए वह खेतों की ओर चला, लेकिन हँसुवे की धार कुंद हो चुकी थी। उसे अपने दोस्त धनराम की याद आ गई। वह धनराम लोहार की दुकान पर धार लगवाने पहुँचा।

धनराम उसका सहपाठी था। दोनों बचपन की यादों में खो गए। मोहन ने मास्टर त्रिलोक सिंह के बारे में पूछा। धनराम ने बताया कि वे पिछले साल ही गुजरे थे। दोनों हँस-हँसकर उनकी बातें करने लगे। मोहन पढ़ाई व गायन में निपुण था। वह मास्टर का चहेता शिष्य था और उसे पूरे स्कूल का मॉनीटर बना रखा था। वे उसे कमजोर बच्चों को दंड देने का भी अधिकार देते थे। धनराम ने भी मोहन से मास्टर के आदेश पर डंडे खाए थे। धनराम उसके प्रति स्नेह व आदरभाव रखता था, क्योंकि जातिगत आधार की हीनता उसके मन में बैठा दी गई थी। उसने मोहन को कभी अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा।

धनराम गाँव के खेतिहर या मजदूर परिवारों के लड़कों की तरह तीसरे दर्जे तक ही पढ़ पाया। मास्टर जी उसका विशेष ध्यान रखते थे। धनराम को तेरह का पहाड़ा कभी याद नहीं हुआ। इसकी वजह से उसकी पिटाई होती। मास्टर जी का नियम था कि सजा पाने वाले को अपने लिए हथियार भी जुटाना होता था। धनराम डर या मंदबुद्ध होने के कारण तेरह का पहाड़ा नहीं सुना पाया। मास्टर जी ने व्यंग्य किया-“तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे। विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?”

इतना कहकर उन्होंने थैले से पाँच-छह दर्रतियाँ निकालकर धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी। हालाँकि धनराम के पिता ने उसे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखा दी। विद्या सीखने के दौरान मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट देते थे, परंतु गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे। एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे। धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत सँभाल ली।

इधर मोहन ने छात्रवृत्ति पाई। इससे उसके पिता वंशीधर तिवारी उसे बड़ा आदमी बनाने का स्वप्न देखने लगे। पैतृक धंधे ने उन्हें निराश कर दिया था। वे कभी परिवार का पूरा पेट नहीं भर पाए। अतः उन्होंने गाँव से चार मील दूर स्कूल में उसे भेज दिया। शाम को थकामाँदा मोहन घर लौटता तो पिता पुराण कथाओं से उसे उत्साहित करने की कोशिश करते। वर्षा के दिनों में मोहन नदी पार गाँव के यजमान के घर रहता था। एक दिन नदी में पानी कम था तथा मोहन घसियारों के साथ नदी पार कर घर आ रहा था। पहाड़ों पर भारी वर्षा के कारण अचानक नदी में पानी बढ़ गया। किसी तरह वे घर पहुँचे इस घटना के बाद वंशीधर घबरा गए और फिर मोहन को स्कूल न भेजा।

उन्हीं दिनों बिरादरी का एक संपन्न परिवार का युवक रमेश लखनऊ से गाँव आया हुआ था। उससे वंशीधर ने मोहन की पढ़ाई के संबंध में अपनी चिंता व्यक्त की तो वह उसे अपने साथ लखनऊ ले जाने को तैयार हो गया। उसके घर में एक प्राणी बढ़ने से कोई अंतर नहीं पड़ता। वंशीधर को रमेश के रूप में भगवान मिल गया। मोहन रमेश के साथ लखनऊ पहुँचा। यहाँ से जिंदगी का नया अध्याय शुरू हुआ। घर की महिलाओं के साथ-साथ उसने गली की सभी औरतों के घर का काम करना शुरू कर दिया। रमेश बड़ा बाबू था। वह मोहन को घरेलू नौकर से अधिक हैसियत नहीं देता था। मोहन भी यह बात समझता था। कह सुनकर उसे समीप के सामान्य स्कूल में दाखिल करा दिया गया। कारों के बोझ व नए वातावरण के कारण वह अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। गर्मियों की छुट्टी में भी वह तभी घर जा पाता जब रमेश या उसके घर का कोई आदमी गाँव जा रहा होता। उसे अगले दरजे की तैयारी के नाम पर शहर में रोक लिया जाता।

मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था। वह घर वालों को असलियत बताकर दुखी नहीं करना चाहता था। आठवीं कक्षा पास करने के बाद उसे आगे पढ़ने के लिए रमेश का परिवार उत्सुक नहीं था। बेरोजगी का तर्क देकर उसे तकनी स्कूल में दाखिल करा दिया गया। वह पहले की तरह घर व स्कूल के काम में व्यस्त रहता। डेढ़-दो वर्ष के बाद उसे कारखानों के चक्कर काटने पड़े। इधर वंशीधर को अपने बेटे के बड़े अफसर बनने की उम्मीद थी। जब उसे

वास्तविकता का पता चला तो उसे गहरा दुख हुआ। धनराम ने भी उससे पूछा तो उसने झूठ बोल दिया। धनराम ने उन्हें यही कहो-मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धिमान थे।

इस तरह मोहन और धनराम जीवन के कई प्रसंगों पर बातें करते रहे। धनराम ने हँसुवे के फाल को बैत से निकालकर तपाया, फिर उसे धार लगा दी। आमतौर पर ब्राहमण टोले के लोगों का शिल्पकार टोले में उठना-बैठना नहीं होता था। काम-काज के सिलसिले में वे खड़े-खड़े बातचीत निपटा ली जाती थी। ब्राहमण टोले के लोगों को बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन धनराम की कार्यशाला में बैठकर उसके काम को देखने लगा।

धनराम अपने काम में लगा रहा। वह लोहे की मोटी छड़ को भट्टी में गलाकर गोल बना रहा था, किंतु वह छड़ निहाई पर ठीक से फेंस नहीं पा रही थी। अतः लोहा ठीक ढंग से मुड़ नहीं पा रहा था। मोहन कुछ देर उसे देखता रहा और फिर उसने दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर कर लिया। नपी-तुली चोटों से छड़ को पीटते-पीटते गोले का रूप दे डाला। मोहन के काम में स्फूर्ति देखकर धनराम अवाक् रह गया। वह पुरोहित खानदान के युवक द्वारा लोहार का काम करने पर आश्चर्यचकित था। धनराम के संकोच, धर्मसंकट से उदासीन मोहन लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई की जाँच कर रहा था। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 56

अनायास-बिना प्रयास के। शिल्पकार-कारीगर। अनुगूँज-प्रतिध्वनि। निहाई-लोहे का ठोस टुकड़ा जिस पर लोहार लोहे को रखकर पीटते हैं। ठनकता-कसा हुआ तेज स्वर। खनक-आवाज। हँसुवा-घास काटने का औजार। बूते-वश। पुरोहिताई-पुरोहित का काम करना। यजमान-पूजा-पाठ कराने वाला। निष्ठा-लगन। संयम-नियंत्रण। जर्जर-जो कमजोर एवं बेकार हो, टूटा-फूटा। उपवास-भूखे रहना। निःश्वास-गहरी साँस। रुद्रीपाठ-भगवान शंकर की पूजा के लिए मंत्र पढ़ना।

पृष्ठ संख्या 57

आशय-मतलब। अनुष्ठान-धार्मिक कार्य। अनुत्तरित-बिना उत्तर पाए। कुंद-धारहीन। धौंकनी-लोहे की नली। कनिस्तर-लोहे का चौकोर पीपा। पारखी-परखने की क्षमता रखने वाला। धमाचौकड़ी-उछल-कूद साँप सुंघ जाना-डर जाना। समवेत-सामूहिक। कुशाग्र-तेज। मॉनीटर—प्रमुख।

पृष्ठ संख्या 58

हमजोली-साथी। हीनता-छोटापन। प्रतिद्वंद्वी-दुश्मन। गुंजाइश-जगह। दूणी-दुगुना। सटाक्-डडा मारने की आवाज़। संटी-छड़ी।

पृष्ठ संख्या 59

घोटा लगाना-रटना। चाबुक लगाना-चोट करना। ताप-गरमी। सामर्थ्य-शक्ति। घन-बड़ा व भारी हथौड़ा। प्रसाद देना-दंड के रूप में वार। विरासत-पुरखों से प्राप्त ज्ञान, संपत्ति आदि। पैतृक-माँ-बाप का।

पृष्ठ संख्या 60

दारिद्र्य-गरीबी। विद्याव्यसनी-विद्या पाने की ललक रखने वाला। उत्साहित-जोश में लाना। डेरा तय करना-रहने का स्थान निर्धारित करना। पात-पतेल-पत्ते आदि। रेला-समूह। बिरादरी-जाति।

पृष्ठ संख्या 61

साक्षात्-सामने। हाथ, बँटाना-सहयोग करना। हैसियत-सामर्थ्य, शक्ति। हीला-हवाली-ना-नुकुर। मेधावी-होशियार। लीक पर चलना-परंपरा के आधार पर चलन्। चारो' न होना-उपाय न होना।

पृष्ठ संख्या 62

मुद्दा-विषय। बाबत-के बारे में। स्वप्नभग सपना दृउन! सैक्नेटेरियट-सचिवालये।

पृष्ठ संख्या 63

फाल-लोहे का हिस्सा। तत्काल-तुरंत। मर्यादा-मान-सम्मान। असमंजस-दुविधा। सँइसी-लोहे को पकड़ने का कैंचीनुमा औज़ार। अभ्यस्त-अभ्यास से सँवरा। सुघड़-सुंदर आकार वाला। हस्तक्षेप-दखल। आकस्मिक-अचानक। अवाक्-मौन, चकित।

पृष्ठ संख्या 64

हाथ डालना-काम के लिए तैयार होना। शक्ति-संदेह। धर्मसंकट-दुविधा। उदासीन-हटकर। त्रुटिहीन-निर्दोष। सर्जक-रचनाकार। स्पर्धा-होड़।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. लंबे बँटवाले हँसुवे को लेकर वह घर से इस उद्देश्य से निकला था कि अपने खेतों के किनारे उग आई काँटेदार झाड़ियों को काट-छाँटकर साफ़ कर आएगा। बूढ़े वंशीधर जी के बूते का अब यह सब काम नहीं रहा। यही क्या, जन्म भर जिस पुरोहिताई के बूते पर उन्होंने घर-संसार चलाया था, वह भी अब वैसे कहाँ कर पाते हैं! यजमान लोग उनकी निष्ठा और संयम के कारण ही उन पर श्रद्धा रखते हैं लेकिन बुढ़ापे का जर्जर शरीर अब उतना कठिन श्रम और व्रत-उपवास नहीं झेल पाता। (पृष्ठ-56)

प्रश्न

1. मोहन घर से किस उद्देश्य के लिए निकला?
2. वंशीधर के लिए कौन-सा कार्य कठिन हो गया?
3. यजमान किस पर श्रद्धा रखते हैं तथा क्यों?

उत्तर-

1. मोहन घर से लंबे बँटवाला हँसुआ लेकर निकला। उसका उद्देश्य था कि इससे वह अपने खेतों के किनारे उग आई काँटेदार झाड़ियों को काट-छाँटकर साफ़ कर देगा।
2. वंशीधर अब बूढ़ा हो गए थे। वे पुरोहिताई का काम तथा खेती से घर का गुजारा करते थे। अधिक उम्र व जर्जर शरीर के कारण अब वे कठिन श्रम व व्रत-उपवास को नहीं कर पाते थे।
3. यजमान वंशीधर पर श्रद्धा रखते हैं। वे उनकी निष्ठा व संयम की प्रशंसा करते हैं और इसी कारण उनका मान-सम्मान करते हैं।

2. मोहन के प्रति थोड़ी-बहुत ईष्य रहने पर भी धनराम प्रारंभ से ही उसके प्रति स्नेह और आदर का भाव रखता था। इसका एक कारण शायद यह था कि बचपन से ही मन में बैठा दी गई जातिगत हीनता के कारण धनराम ने कभी मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा बल्कि वह इसे मोहन का अधिकार समझता रहा था। बीच-बीच में त्रिलोक सिंह मास्टर का यह कहना कि मोहन एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनकर स्कूल का और उनका नाम ऊँचा करेगा, धनराम के लिए किसी और तरह से सोचने की गुंजाइश ही नहीं रखता था। और धनराम! वह गाँव के दूसरे खेतिहर या मज़दूर परिवारों के लड़कों की तरह किसी प्रकार तीसरे दर्जे तक ही स्कूल का मुँह देख पाया था। (पृष्ठ-58)

प्रश्न

1. धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं मानता था?
2. त्रिलोक मास्टर ने मोहन के बारे में क्या घोषणा की थी?
3. धनराम की नियति क्या थी?

उत्तर-

1. धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं मानता था, क्योंकि उसके मन में बचपन से नीची जाति के होने का भाव भर दिया गया था। इसलिए वह मोहन की मार को उसका अधिकार समझता था।
2. त्रिलोक मास्टर ने यह घोषणा की थी कि मोहन एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनकर स्कूल व उनका नाम रोशन करेगा।
3. धनराम गाँव के गरीब तबके से संबंधित था। खेतिहर या मज़दूर परिवारों के बच्चों की तरह वह तीसरी कक्षा तक ही पढ़ पाया। उसके बाद वह परंपरागत काम में लग गया। यही उसकी नियति थी।

3. धनराम की मंदबुद्धि रही हो या मन में बैठा हुआ डर कि पूरे दिन घोंटा लगाने पर भी उसे तेरह का पहाड़ा याद नहीं हो पाया था। छुट्टी के समय जब मास्साब ने उससे दुबारा पहाड़ा सुनाने को कहा तो तीसरी सीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते वह फिर लड़खड़ा गया था। लेकिन इस बार मास्टर त्रिलोक सिंह ने उसके लिए हुए बेंत का उपयोग करने की बजाय ज़बान की चाबुक लगा दी थी, 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' अपने थैले से पाँच-छह दर्राँतियाँ निकालकर उन्होंने धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी थीं। किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। धनराम हाथ-पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूंकने या सान लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा। फर्क इतना ही था कि जहाँ मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट दे देते थे वहाँ गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे और ज़रा-सी गलती होने पर छड़, बेंत, हत्था जो भी हाथ लग जाता उसी से अपना प्रसाद दे देते। एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे तो धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत सँभाल ली और पास-पड़ोस के गाँव वालों को याद नहीं रहा वे कब गंगाराम के आफर को धनराम का आफर कहने लगे थे। (पृष्ठ-59)

प्रश्न

1. धनराम तेरह का पहाड़ा क्यों नहीं याद कर पाया?
2. 'ज़बान की चाबुक' से क्या अभिप्राय है? त्रिलोक सिंह ने धनराम को क्या कहा?
3. अध्यापक और लोहार के दड देने में क्या अंतर था?

उत्तर-

1. धनराम ने तेरह का पहाड़ा सारे दिन याद किया, परंतु वह इस काम में सफल नहीं हो पाया। इसके दो कारण हो सकते हैं-
(क) धनराम की मंदबुद्धि
(ख) मन में बैठा हुआ पिटाई का डर।
 2. इसका अर्थ है-व्यंग्य-वचन। मास्टर साहब ने धनराम को तेरह का पहाड़ा कई बार याद करने को दिया था, परंतु वह कभी याद नहीं कर पाया। उसे कई बार सजा मिली। इस बार उन्होंने उस पर व्यंग्य कसा कि तेरे दिमाग में लोहा भरा है। तुझे पढ़ाई नहीं आएगी।
 3. याद न करने पर मास्टर त्रिलोक बच्चे को अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट देते थे, जबकि लोहार गंगाराम सजा देने का हथियार स्वयं ही चुनते थे। गलती होने पर वे छड़, बेंत, हत्था-जो भी हाथ लगता, उससे सजा देते।
4. औसत दफ्तरी बड़े बाबू की हैसियत वाले रमेश के लिए सोहन को अपनी भाई-बिरादर बतलाना अपने सम्मान के विरुद्ध जान पड़ता था और उसे घरेलू नौकर से अधिक हैसियत ५ह नहीं देता था, इस बात को मोहन भी समझने लगा था। थोड़ी-बहुत हीला-हवाली करने के बाद रमेश ने निकट के ही एक साधारण रो रूकूल में उसका नाम लिखवा दिया। लेकिन एकदम नए वातावरण और रात-दिन के काम के बोझ के कारण गाँव का वह मेधावी छात्र शहर के स्कूली जीवन में अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। उसका जीवन एक बँधी-बँधाई लीक पर चलता रहा। साल में एक बार गर्मियों की छुट्टी में गाँव जाने का मौक भी तभी मिलता जब रमेश या उसके घर का कोई प्राणी गाँव जाने वाला होता वरना उन छुट्टियों को भी अगले दरजे की तैयारी के नाम पर उसे शहर में ही गुज़ार देना पड़ता था। अगले दरजे की तैयारी तो बहाना भर थी, सवाल रमेश और उसकी गृहस्थी की सुविधा-असुविधा का था। मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था, क्योंकि और कोई चारा भी नहीं था। घरवालों को अपनी वास्तविक स्थिति बतलाकर वह दुखी नहीं करना चाहता था। वंशीधर उसके सुनहरे भविष्य के सपने देख रहे थे। (पृष्ठ-61)

प्रश्न

1. रमेश मोहन को किस हैसियत में रखता था तथा क्यों?
2. मोहन स्कूल में अपनी पहचान क्यों नहीं बना पाया?
3. मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया। क्यों?

उत्तर-

1. रमेश मोहन को घरेलू नौकर की हैसियत में रखता था। इसका कारण यह था कि रमेश औसत दफ्तरी बड़े बाबू की हैसियत का था। अतः वह मोहन को अपना भाई-बिरादर बताकर अपना अपमान नहीं करवाना चाहता था।
 2. रमेश ने काफी कहने के बाद मोहन का एक साधारण स्कूल में दाखिला करवा दिया। वह मेधावी था, परंतु घर के अत्यधिक काम और नए वातावरण के कारण वह अपनी प्रतिभा नहीं दिखा पाया। अतः उसकी पहचान स्कूल में नहीं बन पाई।
 3. मोहन को पढ़ने के लिए शहर भेजा गया था, परंतु वहाँ पर उसे घरेलू नौकर की तरह रखा गया। उसे अपने घर की दीन दशा का पता था। वह अपनी वास्तविक स्थिति घर वालों को बताकर दुखी नहीं करना चाहता था। अतः उसने परिस्थितियों से समझौता कर लिया।
- 5.** लोहे की एक मोटी छड़ को भट्ठी में गलाकर धनराम गोलाई में मोड़ने की कोशिश कर रहा था। एक हाथ से सँडसी पकड़कर जब वह दूसरे हाथ से हथौड़े की चोट मारता तो निहाई पर ठीक घाट में सिरा न फैसने के कारण लोहा उचित ढंग से मुड़ नहीं पा रहा था। मोहन कुछ देर तक उसे काम करते हुए देखता रहा फिर जैसे अपना संकोच त्यागकर उसने दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर कर लिया और धनराम के हाथ से हथौड़ा लेकर नपी-तुली चोट मारते, अभ्यस्त हाथों से धौंकनी फूंककर लोहे को दुबारा भट्ठी में गरम करते और फिर निहाई पर रखकर उसे ठोकते-पीटते सुघड़ गोले का रूप दे डाला। (पृष्ठ-63)

प्रश्न

1. मोहन धनराम के आफर क्यों गया था? उस समय धनराम किस काम में तल्लीन था?
2. धनराम अपने काम में सफल क्यों नहीं हो रहा था?
3. मोहन ने धनराम का अधूरा काम कैसे पूरा किया?

उत्तर-

1. मोहन धनराम के आफर पर अपने हँसुवे की धार तेज़ करवाने के लिए गया था। उस समय धनराम लोहे की एक मोटी छड़ को भट्टी में गलाकर उसे गोलाई में मोड़ने का प्रयास कर रहा था।
2. धनराम अपने काम में इसलिए सफल नहीं हो पा रहा था, क्योंकि वह एक हाथ से सँडसी पकड़कर दूसरे हाथ से हथौड़े की चोट मारता तो निहाई पर ठीक घाट में सिरा न फैसने का कारण लोहा सही तरीके से नहीं मुड़ रहा था।
3. मोहन कुछ देर तक धनराम के काम को देखता रहा। अचानक वह उठा और दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर करके धनराम का हथौड़ा लेकर नपी-तुली चोट की। उसके बाद उसने स्वयं धौंकनी फूंककर लोहे को दोबारा भट्टी में गरम किया और फिर निहाई पर रखकर उसे ठोक-पीटकर सुघड़ गोले में बदल दिया।

6. धनराम की संकोच, असमंजस और धर्म-संकट की स्थिति से उदासीन मोहन संतुष्ट भाव से अपने लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई को जाँच रहा था। उसने धनराम की ओर अपनी कारीगरी की स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी-जिसमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार-जीत का भाव। (पृष्ठ-64)

प्रश्न

1. धनराम क असमंजस का क्या कारण था?
2. मोहन की मनःस्थिति पर टिप्पणी कीजिए।
3. धनराम किस संकोच, असमंजस और धर्म-संकट की स्थिति में था?

उत्तर-

1. धनराम के असमंजस के दो कारण थे
(क) मोहन ब्राह्मण होकर भी लुहार का काम कर रहा था।
(ख) मोहन शिक्षित था, फिर भी उसने कुशलतापूर्वक लोहे की छड़ को सुघड़ गोले में बदल दिया। यह भी हैरानी का विषय था।
2. मोहन ने लोहे की छड़ को सुंदर गोले में बदल दिया। इसलिए उसकी आँखों में सर्जक की चमक थी। वह धनराम से अपनी कारीगरी की प्रशंसा चाहता था।
3. धनराम लुहार जाति का था। वह लोहे की अनेक वस्तुएँ बनाया करता था। यह उसका पैतृक पेशा था। मोहन उसके बचपन का मित्र और सहपाठी था, जिसे लोहे के छल्ले बनाते

हुए देखकर धनराम अपने मित्र के सामने वह संकोच, असमंजस और धर्म-संकट महसूस कर रहा था।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1:

कहानी के उस प्रसंग का उल्लेख करें, जिसमें किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है।

उत्तर-

जिस समय धनराम तेरह का पहाड़ा नहीं सुना सका तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने जबान के चाबुक लगाते हुए कहा कि 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' यह सच है कि किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। उन्होंने बचपन में ही अपने पुत्र को धौंकनी फूंकने और सान लगाने के कामों में लगा दिया था। वे उसे धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगे। उपर्युक्त प्रसंग में किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है।

प्रश्न 2:

धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं समझता था?

उत्तर-

धनराम के मन में नीची जाति के होने की बात बचपन से बिठा दी गई थी। दूसरे, मोहन कक्षा में सबसे होशियार था। इस कारण मास्टर जी ने उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया था। तीसरे, मास्टर जी कहते थे कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल और उनका नाम रोशन करेगा। उसे भी मोहन से बहुत आशाएँ थीं। इन सभी कारणों से वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था।

प्रश्न 3:

धनराम को मोहन के लिए व्यवहार पर आश्चर्य होता है और क्यों?

उत्तर-

मोहन ब्राह्मण जाति का था और उस गाँव में ब्राह्मण शिल्पकारों के यहाँ उठते-बैठते नहीं थे। यहाँ तक कि उन्हें बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन धनराम की दुकान पर काम खत्म होने के बाद भी काफी देर तक बैठा रहा। इस बात पर धनराम को हैरानी हुई। उसे अधिक हैरानी तब हुई जब मोहन ने उसके हाथ से हथौड़ा लेकर लोहे पर नपी-तुली चोटें मारी और धौंकनी फूंकते हुए भट्ठी में लोहे को गरम किया और ठोक-पीटकर उसे गोल रूप दे दिया। मोहन पुरोहित खानदान का पुत्र होने के बाद निम्न जाति के काम कर रहा था। धनराम शक्ति दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा।

प्रश्न 4:

मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय क्यों कहा है?

उत्तर-

लेखक ने मोहन के लखनऊ प्रवास को उसके जीवन का एक नया अध्याय कहा है। यहाँ आने पर उसका जीवन बँधी-बँधाई लीक पर चलने लगा था। वह सुबह से शाम तक नौकर की तरह काम करता था। नए वातावरण व काम के बोझ के कारण मेधावी छात्र की प्रतिभा कुंठित हो गई। उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पनाएँ नष्ट हो गईं। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए उसे कारखानों और फैक्ट्रियों के चक्कर लगाने पड़े। उसे कोई काम नहीं मिल सका।

प्रश्न 5:

मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान के चाबुक कहा है और क्यों?

उत्तर-

जब धनराम तेरह का पहाड़ा नहीं सुना सका तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने व्यंग्य वचन कहे 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' लेखक ने इन व्यंग्य वचनों को ज़बान के 'चाबुक' कहा है। चमड़े की चाबुक शरीर पर चोट करती है, परंतु ज़बान की चाबुक मन पर चोट करती है। यह चोट कभी ठीक नहीं होती। इस चोट के कारण धनराम आगे नहीं पढ़ पाया और वह पढ़ाई छोड़कर पुश्तैनी काम में लग गया।

प्रश्न 6:

(1) बिरादरी का यही सहारा होता है।

(क) किसने किससे कहा?

(ख) किस प्रसंग में कहा?

(ग) किस आशय से कहा?

(घ) क्या कहानी में यह आशय स्पष्ट हुआ है?

उत्तर-

(क) यह वाक्य मोहन के पिता वंशीधर ने बिरादरी के संपन्न युवक रमेश से कहा।

(ख) जब वंशीधर ने मोहन की पढ़ाई के बारे में चिंता व्यक्त की तो रमेश ने उससे सहानुभूति जताई और उन्हें सुझाव दिया कि वे मोहन को उसके साथ ही लखनऊ भेज दें ताकि वह शहर में रहकर अच्छी तरह पढ़-लिख सकेगा।

(ग) यह कथन रमेश के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए कहा गया। बिरादरी के लोग ही एक-दूसरे की मदद करते हैं।

(घ) कहानी में यह आशय स्पष्ट नहीं हुआ। रमेश अपने वायदे को पूरा नहीं कर पाया। वह मोहन को घरेलू नौकर से अधिक नहीं समझता था। उसने व परिवार ने मोहन का खूब शोषण किया और प्रतिभाशाली विद्यार्थी का भविष्य चौपट कर दिया। अंत में उसे बेरोजगार कर घर वापस भेज दिया।?

(2) उसकी अखिों में एक सजक की चमक थी-कहानी का यह वाक्य-

(क) किसके लिए कहा गया है?

(ख) किस प्रसंग में कहा गया है?

(ग) यह पात्र-विशेष के किन चारित्रिक पहलुओं को उजागर करता है?

उत्तर-

(क) यह वाक्य मोहन के लिए कहा गया है।

(ख) मोहन धनराम की दुकान पर हँसुवे में धार लगवाने आता है। काम पूरा हो जाने के बाद भी वह वहीं बैठा रहता है। धनराम एक मोटी लोहे की छड़ को गरम करके उसका गोल घेरा बनाने का प्रयास कर रहा होता है, परंतु सफल नहीं हो पा रहा है। मोहन ने अपनी जाति की परवाह न करके हथौड़े से नपी-तुली चोट मारकर उसे सुघड़ गोले का रूप दे दिया। अपने सधे हुए अभ्यस्त हाथों का कमाल के उपरांत उसकी आँखों में सर्जक की चमक थी।

(ग) यह मोहन के जाति-निरपेक्ष व्यवहार को बताता है। वह पुरोहित का पुत्र होने के बाद भी अपने बाल सखा धनराम के आफर पर काम करता है। यह कार्य उसकी बेरोजगारी की दशा को भी व्यक्त करता है। वह अपने मित्र से काम न होता देख उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ा देता है और काम पूरा कर देता है।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1:

गाँव और शहर, दोनों जगहों पर चलने वाले मोहन के जीवन-संघर्ष में क्या फ़र्क है? चर्चा करें और लिखें।

उत्तर-

मोहन को गाँव व शहर, दोनों जगह संघर्ष करना पड़ा। गाँव में उसे परिस्थितिजन्य संघर्ष करना पड़ा। वह प्रतिभाशाली था। स्कूल में उसका सम्मान सबसे ज्यादा था, परंतु उसे चार मील दूर स्कूल जाना पड़ता था। उसे नदी भी पार करनी पड़ती थी। बाढ़ की स्थिति में उसे दूसरे गाँव में यजमान के घर रहना पड़ता था। घर में आर्थिक तंगी थी। शहर में वह घरेलू नौकर का कार्य करता था। साधारण स्कूल के लिए भी उसे पढ़ने का समय नहीं दिया जाता था। वह पिछड़ता गया। अंत में उसे बेरोजगार बनाकर छोड़ दिया गया।

प्रश्न 2:

एक अध्यापक के रूप में त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व आपको कैसा लगता है? अपनी समझ में

उनकीखूबियों और खामियों पर विचार करें।

उत्तर-

मास्टर त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व अध्यापक के रूप में ठीक-ठाक लगता है। वे अच्छे अध्यापक की तरह बच्चों को लगन से पढ़ाते थे। वे किसी के सहयोग के बिना पाठशाला चलाते थे। वे अनुशासन प्रिय हैं तथा दंड के भय आदि के द्वारा बच्चों को पढ़ाते हैं। वे होशियार बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। इन सब विशेषताओं के बावजूद उनमें कमियाँ भी हैं। वे जातिगत भेदभाव को मानते हैं। वे विद्यार्थियों को सख्त दंड देते थे। वे मोहन से भी बच्चों की पिटाई करवाते थे। वे कमजोर बच्चों को कटु बातें बोलकर उनमें हीन भावना भरते थे। छात्रों में हीनभावना तथा भेदभाव करने का उनका तरीका अशोभनीय था।

प्रश्न 3:

गलत लोहा कहानी का अंत एक खास तरीके से होता है। क्या इस कहानी का कोई अन्य अंत हो सकता है? चचा करें?

उत्तर-

कहानी के अंत से स्पष्ट नहीं होता कि मोहन ने लुहार का काम स्थाई तौर पर किया या नहीं। कहानी का अन्य तरीके से भी अंत हो सकता था-

(क) शहर से लौटकर हाथ का काम करना।

(ख) मोहन को बेरोजगार देखकर धनराम का व्यंग्य वचन कहना।

(ग) मोहन के माता-पिता द्वारा रमेश से झगड़ा करना आदि।

भाषा की बात

प्रश्न 1:

पाठ में निम्नलिखित शब्द लौहकर्म से संबंधित हैं। किसका क्या प्रयोजन हैं? शब्द के सामने लिखिए

(क) धोकनी

(ख) दराँती

(ग) सइसी

- (घ) आफर
- (ङ) हथौड़ा

उत्तर-

- (क) धौंकनी-यह आग को सुलगाने व धधकाने के काम में आती है।
- (ख) दराँती-यह खेत में घास या फसल काटने का काम करती है।
- (ग) सँइसी-यह ठोस वस्तु को पकड़ने का काम करती है तथा केंची की तरह होता है।
- (घ) आफर-भट्ठी या लुहार की दुकान।
- (ङ) हथौड़ा-ठोस वस्तु पर चोट करने का औज़ार। यह लोहे को पीटता-कूटता है।

प्रश्न 2:

पाठ में 'काट-छाँटकर' जैसे कई संयुक्त क्रिया शब्दों का प्रयोग हुआ है। कोई पाँच शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर-

- (क) उठा-पटककर-बच्चों ने घर में उठा-पटककर सारा सामान बिखेर दिया।
- (ख) उलट-पलट-दंगाइयों ने दुकान का सारा सामान उलट-पलट दिया।
- (ग) पढ़-लिखकर-हर युवा पढ़-लिखकर अफसर बनना चाहता है।
- (घ) सहमते-सहमते-बैंग खोने के कारण रोहित सहमते-सहमते घर में घुसा।
- (ङ) खा-पीकर-हम लोग झील में खा-पीकर नाव चलाने लगे।

प्रश्न 3:

'बूते का' प्रयोग पाठ में तीन स्थानों पर हुआ है उन्हें छाँटकर लिखिए और जिन संदर्भों में उनका प्रयोग है, उन संदर्भों में उन्हें स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

(क) बूढ़े वंशीधर के बूते का अब यह सब काम नहीं रहा।

संदर्भ-लेखक स्पष्ट करना चाहते हैं कि वृद्ध होने के कारण वंशीधर से खेती का काम नहीं होता।

(ख) दान-दक्षिणा के बूते पर वे किसी तरह परिवार का आधा पेट भर पाते थे।

संदर्भ-यह वंशीधर की दयनीय दशा का वर्णन करता है, साथ ही पुरोहिती के व्यवसाय की निरर्थकता को भी बताता है।

(ग) सीधी चढ़ाई चढ़ना पुरोहित के बूते की बात नहीं थी।

संदर्भ-वंशीधर वृद्ध हो गए। इस कारण वे पुरोहिताई का काम करने में भी समर्थ नहीं थे

प्रश्न 4:

मोहन थोड़ा दही तो ला दे बाज़ार से।

मोहन! ये कपड़े धोबी को दे तो आ।

मोहन एक किलो आलू तो ला दे।

ऊपर के वाक्यों में मोहन को आदेश दिए गए हैं। इन वाक्यों में आप सर्वनाम का इस्तेमाल करते हुए उन्हें दुबारा लिखिए।

उत्तर-

(क) आप बाज़ार से थोड़ा दही तो ला दीजिए।

(ख) आप ये कपड़े धोबी को दे तो आइए।

(ग) आप एक किलो आलू तो ला दीजिए।

विज्ञापन की दुनिया

विभिन्न व्यापारी अपने उत्पाद की बिक्री के लिए अनेक तरह के विज्ञापन बनाते हैं। आप भी हाथ से बनी किसी वस्तु की बिक्री के लिए एक ऐसा विज्ञापन बनाइए जिससे हस्तकला का कारोबार चले।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

अन्य हल प्रश्न

● बोधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:

‘गलता लोहा’ कहानी का प्रतिपादय स्पष्ट करें।

उत्तर-

गलता लोहा कहानी में समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी की गई है। यह कहानी लेखक के लेखन में अर्थ की गहराई को दर्शाती है। इस पूरी कहानी में लेखक की कोई मुखर टिप्पणी नहीं है। इसमें एक मेधावी, किंतु निर्धन ब्राहमण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है, जहाँ उसके लिए जातीय अभिमान बेमानी हो जाता है। सामाजिक विधि-निषेधों को ताक पर रखकर वह धनराम लोहार के आफर पर बैठता ही नहीं, उसके काम में भी अपनी कुशलता दिखाता है। मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे के प्रस्तावित करता प्रतीत होता है मानो लोहा गलकर नया आकार ले रहा हो।

प्रश्न 2:

मोहन के पिता के जीवन-संघर्ष पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-

मोहन के पिता वंशीधर तिवारी गाँव में पुरोहिती का काम करते थे। पूजा-पाठ धार्मिक अनुष्ठान करना-करवाना उनका पैतृक पेशा था। वे दूर-दूर तक यह कार्य करने जाते थे। इस कार्य से

परिवार का गुजारा मुश्किल से होता था। वे अपने हीनहार बेटे को भी नहीं पढ़ा पाए। यजमान उनकी थोड़ी बहुत सहायता कर देते थे।

प्रश्न 3:

कहानी में चित्रित सामाजिक परिस्थितियाँ बताइए।

उत्तर-

कहानी में गाँव के परंपरागत समाज का चित्रण किया गया है। ब्राहमण टोले के लोग स्वयं को श्रेष्ठ समझते थे तथा वे शिल्पकार के टोले में उठते-बैठते नहीं थे। कामकाज के कारण शिल्पकारों के पास जाते थे, परंतु वहाँ बैठते नहीं थे। उनसे बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन कुछ वर्ष शहर में रहा तथा बेरोजगारी की चोट सही। गाँव में आकर वह इस व्यवस्था को चुनौती देता है।

प्रश्न 4:

वंशीधर को धनराम के शब्द क्यों कचोटते रहे?

उत्तर-

वंशीधर को अपने पुत्र से बड़ी आशाएँ थीं। वे उसके अफसर बनकर आने के सपने देखते थे। एक दिन धनराम ने उनसे मोहन के बारे में पूछा तो उन्होंने घास का एक तिनका तोड़कर दाँत खोदते हुए बताया कि उसकी सफ़्टवेयर में नियुक्ति हो गई है। शीघ्र ही वह बड़े पद पर पहुँच जाएगा। धनराम ने उन्हें कहा कि मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धिमान थे। ये शब्द वंशीधर को कचोटते रहे, क्योंकि उन्हें मोहन की वास्तविक स्थिति का पता चल चुका था। लोगों से प्रशंसा सुनकर उन्हें दुःख होता था।